नागरी लिपि का उत्पत्ति तथा प्रसार

Naagari Lipi Ka Utpatti Tatha Prasar

***Dr.Babitha.B.M. Associate Professor and HOD of Hindi, S S M R V College, Bangalore.**

भूमिका:-

बोलते समय हमारे मुख से ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनियों को लिखने के लिए प्रयोग किए जाने वाले चिन्हों को लिपि कहते हैं । लिपि का अर्थ है: किसी भाषा की लेखन शैली अथवा ढंग. दूसरे शब्दों में- एक भाषा को लिखने के लिए जिन चिन्हों का उपयोग किया जाता है उसे लिपि कहते हैं ।

देवनागरी लिपि भारत की सबसे प्रचलित लिपियों में से एक है. इसमें कई भाषाएं लिखी जाती हैं जैसे हिंदी, संस्कृत, मराठी, पाली, राजस्थानी, नेपाली, गुजराती, भोजपुरी आदि। देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है । इस लिपि का प्रयोग सर्वप्रथम गुजरात नरेश जयभट्ट के शिलालेख में मिलता है । अधिकांशत लिपियों की तरह देवनागरी लिपि भी बाएं से दाएं और लिखी जाती है । इसके प्रत्येक शब्द के ऊपर एक क्षैतिज रेखा होती है जिसे शिरोरेखा भी कहा जाता है. यह अक्षरात्मक लिपि है।

जिस प्रकार मनुष्य कोरोटी, कपडा और मकान की जरूरत होती है से ही भाषा बोलने की भी। उसे अपने कमियों को दूर करने केलिए विचारों का विनियमय करना पडता है। लिपि और भाषा मानव के विचार विनिमय के साधन हैं। मनुष्य के विचार ही भाषा को जन्म दिये हैं। जिस प्रकर भाषा उद्भव के विविध सिध्दांत हैं जैसे प्रत्येक्ष मार्ग, दैवी उत्पत्ति का सिद्धांत, अनुकरण सिद्धांत, धातुसिद्धांत, श्रमपरिहार सिध्दांत, यो-हे-होसिध्दांत आदि। उसी प्रकार हिंदी भाषा और देवनागरि लिपि के भी कुछ सिध्दांत, कुछ पहलू और एक लंबा इतिहास है। प्राचीन काल में प्रतीक लिपि, चित्र लिपि,भाव लिपि,ध्वनि लिपि आदि दिखाई देते हैं।

पहले मनुष्य ध्वनि द्वारा, चित्रों द्वरा, हाव-भावों द्वारा विचारों को व्यक्त करता था और बाद में मानव जैसे-जैसे शिक्षित होता गाया वैसे-वैसे भाषा और लिपि का उद्भव विकास भी हुआ तथा उसके द्वरा अपने विचारों को व्यक्त करने लगा। हम भाषा और लिपि की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं- "मानव मुख से उच्चरित सार्थक ध्वनि समूह को भाषा कहते हैं और किसी भी एक भाषा के लिखित या रेखांकित संकेतों को हम लिपि कहसकते हैं"। भाषा ध्वनियों पर आधारित होती है वैसे ही लिपि चित्रों व रेखाओं पर आधारित होती है। आजकल मोबैल में ऐसे दोनों प्रकार के उदाहरण देखने को मिलते हैं।

अब हम लिपि के बारे में बात करें तो, हर एक भाषा के वर्ण या लिपि अलग-अलग होती है। उदाहरण केलिए अरबी और उर्दु की फ़ारसी, हिंदी, संस्कृत की देवनगरी लिपि, अंग्रेजी की ल्याटिन लिपि आदि। बहु भाषी भारतमें 22से भी अधीक प्रमुख भाषाएँ और 11 लिपियाँ हैं और उनकी उपभषाएँ हैं, साथ-साथ बोलियाँ, उपबोलियाँ भी हैं। सरल ध्वनि और लिपि के माध्यम से ही एक सशक्त भाषा बनती है।

नागरी लिपि का उद्भव और विकास:-

प्राचीन काल के लोगों मानना है कि भाषा और लिपि का निर्माण भगवान ने कियाहै अथवा किसी देवि-देवता द्वारा सका निर्माण हुआ है। भारतीय भाषा पंडितों के अनुसार ब्राह्मी लिपि को ब्रह्मा ने बनाई इसलिए उसका नाम 'ब्राह्मी' पडाहै। भाषा विज्ञानी डॉ. भोलानाथ तिवारी इस संबंध में लिखते हैं कि -"भारतीय पंडित ब्राह्मी लिपि को ब्रह्मा की बनाई हुई मानते हैं और इसकेलिए उनके पास सब से बडा प्रमाण यह है कि लिपि का नाम ही 'ब्राह्मी' है"।

ब्राह्मी लिपि के संबंध में दूसरी मान्यता डॉ. शामसुन्दर दास की यह है कि -"भारत की ब्राह्मी लिपि एक स्वतंत्र लिपि है। उसका प्रादुर्भाव वैदिक काल में ही भारतीय आर्यों द्वारा हुआ था"।2 शायद वैदिक काल में संस्कृत भाषा की लिपि के रूप में इसका प्रयोग होने लगा। संस्कृत को देव भाषा और उसकी लिपि को देवनागरी कहा जाता था।

इसी प्रकार लिपि निर्माण के संबंध में विविध देशों के लोगों की मान्यताएँ किस प्रकार हैं? यह हम यहाँ देखसकते हैं- भारत में देवनागरी का निर्माण 'ब्रह्मा' (Lord brahma) नेकिया, उसी प्रकार मिश्र केलोग 'थाथ' (Thoth) भगवानको, बेबिलोनिया के लोग नेबो(Nebo) भगवान को, ज्यूके लोग मोसेज (Moses) भगवान को, यूनान के लोग हर्मेस (Hermes) आदि देवि-देवतावों को अपनी-अपनी लिपि के निर्माता मानते हैं। यह सब विश्वास मात्र है, कभी-कभी सच्चाई अलग होती है, विश्वास, अंधविश्वास अलग होता है।

भरत में ब्राह्मी लिपि का प्रयोग ई.पू. 5 वीं सदी से लेकर ई.सन 4 वीं सदी मध्य भाग तक अर्थात सन 350 ई. तक होता रहा। उसके बाद इसकी दो शैलियाँ निकलते हैं- अ) उत्तरी ब्राह्मी शैली आ) दक्षिणी ब्राह्मी शैली। आगे चल कर उत्तरी शैली से चौथी सदि के मध्य से छटी सदि (ई. सन4 सदि के मध्य से 6 सदि) तक गुप्त लिपि का बोला – बाला था। इसमें 5 स्वर 32 व्यंजन अक्षर थे। इस गुप्त लिपि से 4 उप लिपि प्रकार विकसित हुए जो- 1.पूर्वी गुप्त लिपि, 2.पश्चिमी गुप्त लिपि, 3.दक्षिणी गुप्त लिपि और 4. मध्य एशियाई गुप्त लिपि।मध्य एशियाई गुप्त लिपि सेअ) ऐग्नियन आ) कुचियन लिपियाँ निकलती हैं। आगे मध्य एशियाई गुप्त लिपि से खेतानी लिपि का रूप निकलता है। उसी प्रकार पूर्वी गुप्त लिपि की शाखा से सिद्ध मार्त का लिपि का जन्म होता है आगे कुटिल लिपि और उस से सन 500 ई. के आस-पास देवनगरी के प्राचीन लिपि रूप का जन्म होता है। आगे देवनागरी धीरे-धीरे अपने जडें फ़ैलाती जातीहै। इस गुप्त लिपि के प्रभाव और प्राचीन नागरी से ही अनेक आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विकास होता है जैसे-सिंधी, गुजराती, महाजनी, कैथी, मैथिली, लहंदा, पंजाबी, मराठी, उडिया, बंगला, असमिया, हिंदी, राजस्थानी, बिहारी और पहाडी आदि। यह भाषाएँ स्थानीय विशेषताओं को ग्रहण करते हुए अनेक उप भाषाएँ और बोलियों में विकसित हुईं। आगे चलकर देवनागरी हिंदी सन 700 ई. के आस-पास प्रयोग होने वाले आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ अधिक विकास पा लेती है।

अशोक के शासन काल में इसे गुप्त लिपि नाम से पुकारते थे साम्राट अशोक के शिला लेखों में ब्राह्मी और नागरी लिपि का प्रयोग होता था, इसका उदाहरण अशोक के शिला स्तंभों में मिलता है जो- "सत्यमेव जयते" देवनागरी लिपि में ही लिखा है। इस प्राकार भी माना जाता है कि इस की खोज अर्यों ने ही की थी। इसे गुप्त काल में गुप्त लिपि कहा गया और

बाद में देवनागरी नाम पडा। 7 वीं शताब्दी के बाद नगरी लिपि का प्रयोग लगातार होता रहा। लोक नागरी, नागरी हिंदी इसके दो नाम हुए।

प्रसिध्द भषा विज्ञानी भोलानाथ तिवारी का कहना है कि-"गुप्त लिपि से 6 वीं सदी में कुटिल लिपि विकसित हुई जो 8 वीं सदी तक प्रयुक्त होती रही। इस कुटिल लिपि से ही 9 वीं सदी के लग-भग नगरी के प्रचीन रूप का विकास हुआ जिसे प्राचीन नागरी कहतेहैं "।3 यह प्राचीन नागरी उत्तर भारत के अधिकांश क्षेत्र में यह बोली जाती थी लेकिन दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में भी यह मिली है। दक्षिण में इसको नंदी नागरी कहकर पुकारते थे। आगे चलकर- "प्राचीननागरीसेही 15वीं – 16 वीं सदी में आधुनिक हिंदी का विकास हुआ"।

हिंदी को देवनागरी लिपि नाम आने के कारण ?:-

कुछ लोग इसे नगर प्रदेश की भाषा होने के कारण नागरी नाम आने की बात कहते हैं। और कुछ लोग गुजरात के नागर प्रदेश में ब्राह्मण लोग इसका प्रयोग करते थे चमत्कार पुर के राजा 'वेदवेत्ता' ब्राह्मणों कोउ सप्रदेश में बुलाकर बसया था और उस गाँव को 'नगर' रखा और वहाँ के लोगों द्वारा प्रयोग होने वाली भाषा को 'नागरी' भाषा के नाम से पुकारा जाने लगा।

देवनगरी लिपि का स्वरूप:-

नागरी लिपि वैज्ञानिक है। खडी पाई वाली देवनागरी को बाँये (left) सेदाँये (right) की ओर लिखा जाता है। नागरी लिपि खडी पाई वाले अक्षरों में लिखी जाती है। वर्ण के लिए अक्षर और वत्ताक्षर होते हैं। वर्णों, शब्दों के नाम, उच्चारऔर अर्थ एक ही होते हैं। अंग्रेजी और फ़ारसी में ऐसा नहीं होता शब्दों का उच्चार एक होता है और उसका अर्थ एक होता है। नगरी लिपि में ह्रस्व, दीर्घ, अनुस्वर, अल्पप्राण, महाप्राण आदि होते हैं। स्वरों में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ आदि। क, ख, ग, घ, ड. आदि । जैसे लिखते हैं वैसे ही पडते भी हैं, उदा: हसनखान. कुलकर्णी लिखते हैं तो हसनखान. कुलकर्णी ही पढ लेते हैं । का गुणिताक्षर, वत्ताअक्षर आगये तो उनको भी जैसे के तैसे प्रकट कियजा सकता है। हिंदी में 11 स्वर और 45 व्यंजन हैं।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से देवनागरी लिपि अक्षरात्मक (सिलेबिक) लिपि मानी जाती है। लिपि के विकाससोपानों की दृष्टि से "चित्रात्मक", "भावात्मक" और "भावचित्रात्मक" लिपियों के अनंतर "अक्षरात्मक" स्तर की लिपियों का विकास माना जाता है। पाश्चात्य और अनेक भारतीय भाषाविज्ञानविज्ञों के मत से लिपि की अक्षरात्मक अवस्था के बाद अल्फाबेटिक (वर्णात्मक) अवस्था का विकास हुआ। सबसे विकसित अवस्था मानी गई है ध्वन्यात्मक (फोनेटिक) लिपि की। "देवनागरी" को अक्षरात्मक इसलिए कहा जाता है कि इसके वर्ण- अक्षर (सिलेबिल) हैं- स्वर भी और व्यंजन भी। "क", "ख" आदि व्यंजन सस्वर हैं- अकारयुक्त हैं। वे केवल ध्वनियाँ नहीं हैं अपितु सस्वर अक्षर हैं। अत: ग्रीक, रोमन आदि वर्णमालाएँ हैं। परंतु यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि भारत की "ब्राह्मी" या "भारती" वर्णमाला की ध्वनियों में व्यंजनों का "पाणिनि" ने वर्णसमाम्नाय के १४ सूत्रों में जो स्वरूप परिचय दिया है- उसके विषय में "पतंजलि" (द्वितीय शताब्दी ई.पू.) ने यह स्पष्ट बता दिया है कि

व्यंजनों में संनियोजित "अकार" स्वर का उपयोग केवल उच्चारण के उद्देश्य से है। वह तत्वतः वर्ण का अंग नहीं है। इस दृष्टि से विचार करते हुए कहा जा सकता है कि इस लिपि की वर्णमाला तत्वतः ध्वन्यात्मक है, अक्षरात्मक नहीं।

संदर्भग्रंथ:- 1.भाषाविज्ञान, ले. भोलानाथतिवारी,पृष्ठ-434,पंक्ति-10

2. भाषाविज्ञानले. डॉ. शामसुंदर्दासपृष्ठ-205, पंक्ति-12-13

3. भाषाविज्ञान, ले. भोलानाथतिवारी,पृष्ठ-468, पंक्ति-13

4. --वही-- पृष्ठ-468, पंक्ति-21